REVIEWS OF LITERATURE
ISSN: 2347-2723
IMPACT FACTOR : 3.3754(UIF)
VOLUME - 5 | ISSUE - 7 | FEBRUARY - 2018

जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के शासन काल में सीदी मौला विवाद : संक्षिप्त विवेचन

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज आफ ऐजूकेशन, सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़
गुरूहरसहाय फिरोजपुर (पंजाब)

सारांश

जलालुद्दीन ने अपने जीवन में एक बार ही असाधारण निर्ममता का व्यवहार किया वह था सीदी मौला की हत्या। इसे इसके शासनकाल में अपवाद ही समझा जाता है। यद्यपि सीदी मौला को मृत्यु दण्ड जलालुद्दीन ने विस्तृत छानवीन और जॉच पडताल करके नहीं दिया। इस कार्य में उसने धैर्य से काम नहीं लिया। यदि जनता के समक्ष निष्पक्ष रूप से जॉच की जाती तो वह भी उसकी असलियत से वाकिफ होती तथा वह जलालुद्दीन के मृत्युदण्ड़ की आलोचना न करके समर्थन ही करती।

प्रस्तावना :

सीदी मौला मूलरूप से ईरान का निवासी था तथा इसने दूसरे देशों के प्रसिद्ध सन्यासियों से सम्पर्क के लिये ईरान को छोड़ा था। शेख फरीदउद्दीन गंजशकर का यश इसे हिन्दुस्तान लाया। इसने इस महासंत से अजोधन में भेंट की और इसी के अन्तर्गत नौकरी प्रारम्भ की।[1] फरिश्ता के अनुसार सीदी मौला पेशे तथा कार्य से संत (दरवेश) था।[2] सुल्तान बलवन के राज्यकाल के प्रथम वर्षो में वह दिल्ली शहर आया। यह कभी भी जामा मस्जिद में जुमा की नामाज पढ़ने नहीं जाता था और कभी भी जनसमूह में नहीं पढ़ता था। यह साधारण जीवन व्यतीत करता, सभी इन्द्रियभोग सुखों से दूर रहता था। यह कोई सेविका या दास अपने लिये नहीं रखता था। इस प्रकार यह विलासता के कभी भी निकट नहीं आया।[3] यह जनता से कुछ भी दान नहीं लेता था। तब भी यह इतना खर्च करता कि लोग इसके मुक्त हस्तदान को देखकर बड़े हैरान थे ओर समझते थे कि यह कीमिया (मंत्र बल से या पारसमणि) के प्रभाव से इतना धन प्राप्त कर लेता है।[4] इसने आजोद द्वार पर एक विशाल खानकाह बनवाया जिसमें चारों दिशाओं की जनता उसके पास आती थी वह लोगों को विचित्र रूप से यह बताकर कि अमुख स्थान के नीचे खजाना है वहॉ से ले लो, उनको धन देता था। वहॉ से प्राप्त सोना या टके इतने चमकीले प्रतीत होते थे जैसे कि अभी–अभी टकशाल से लाये गये हों।[5] सीदी के दस्तरख्वान पर इतने अधिक लोग भोजन करते थे कि यदि बरनी के कथन पर विश्वास किया जाये तो उसके भोजनालय की रसोई में प्रतीदिन 2000 मन मैदा (आटा), 5 सौ मन मॉस, 5 सौ मन घी, 2 सौ से 3 सौ मन तक शक्कर और 100 या 200 मन सब्जियॉ खर्च होती थी। इस भोजनालय में ऐसा बहुमूल्य भोजन प्रतिदिन दो बार खिलाया जाता था कि कोई खान या मलिक ऐसा भोजन नहीं करा सकता था।[6] सुल्तान जलालुद्दीन एक बार सीदी के खानकाह में गुप्त रूप से गया और उसने वही देखा जो कि उसे बताया गया था। सीदी उससे भी अधिक व्यय करता था।[7]

सीदी के क्रिया–कलापों का विस्तृत और गहन अध्ययन करने पर ही सीदी मौला ने जो षडयंत्र रचा था उसके कारणों का ज्ञान हो जाता है–

- यह वास्तविक अर्थों में संत नहीं था, वह नाम प्रसिद्धी और सम्मान का आकांक्षी था। मुक्त रूप से मलिकों तथा अमीरों से मिलता और राजनीति पर चर्चा करता। जब ये आजोधन से दिल्ली आ रहा था तो शेख फरीद[8] के

पास गया तथा दो–तीन दिन उनकी सेवा में रहा। शेख फरीद ने जो सीदी के स्वभाव से परचित था–उसे चेतावनी दी के मलिकों तथा अमीरों से दूर रहना यदि वे तेरे निवास स्थान पर ज्यादा आयें तथा मेल–जोल बढ़ाये तो इसे अपने लिए घातक समझना। इस प्रकार के दरवेश का अन्त बहुत खराब होता है। इस चेतावनी के बावजूद भी सीदी ने अपने सम्बधों को अमीरों से बढ़ाया। सुल्तान बलवन के कठोर शासनकाल में यह अमीरों तथा मलिकों से मेलजोल बढ़ाने में सफल नहीं हो सका था। क्योकि बलवन अपनी गुप्तचर व्यवस्था से प्रत्येक सन्देहास्पद व्यक्ति पर पैनी नजरे रखता था।

- निर्बल और विलासी मुईजुद्दीन के शासन में सभी बेखबर तथा असावधान थे। सीदी ने मनमाना खर्च करना प्रारम्भ कर लोगों को अपने खानकाह की ओर आकर्षित करने लगा।[9] जलालुद्दीन का शासन आते–आते उसने बहुत प्रसिद्धी प्राप्त कर ली। इसके पास आने वाले जनसमूह की संख्या में बढ़ोत्तरी के साथ–साथ छोटे–बड़े अमीर और मलिक इसे सम्मान देने लगे यहॉ तक कि सुल्तान जलालुद्दीन का ज्येष्ठ पुत्र खानेखाना भी इसका बहुत बड़ा भक्त, विश्वासपात्र तथा आज्ञाकारी शिष्य बन गया। खानेखाना इतने मुक्त रूप से सीदी के प्रति आकर्षित था कि सीदी उसे पुत्र कहा करता था।[10]
- सीदी के खानकाह में जो भी हो रहा था उसका कारण यह भी दिखता है कि जलालुद्दीन 70 वर्ष से अधिक का हो गया था। उसके दो ज्येष्ठ पुत्र सिंहासन पर दृष्टि लगाये पड़े थे और वह पिता की जीवित अवस्था में ही अपनी–अपनी स्थिति सुदृढ़ कर लेना चाहते थे। इससे स्पष्ट रूप से मालूम होता है कि राजधानी में दो राजनीतिक दल बन गये थे। एक खान–ए–खाना के अन्तगंत जिसने सीदी से गठबंधन करके अपनी ओर बलबनी अमीरों के पुत्रों को कर लिया था और दूसरा दल अर्कली जो स्वभावतः संत के विरूद्ध हो गया था।[11]
- इस बात पर भी सन्देह करने के पूरे कारण है कि खानेखाना ही सीदी मौला के पूरे खानकाह का व्यय करता होगा।
- तुर्की अमीर जो खिलजियों से अपनी शत्रुता नहीं भूले थे सीदी की खानकाह में एकत्रित होने लगे थे।
- जलालुद्दीन की दयालुता तथा नृप सुलभ प्रताप और शिष्टता के अभाव ने इन लोगों के कार्य–कलापों को परोक्ष रूप से उत्साहित किया।
- सीदी के अद्भुत दान–पुण्य ने उसे एक संस्था का रूप दिया जिसने बाद में धार्मिक अनुयायियों के अतिरिक्त अधिकांश साधनहीन बलबनी अमीरों अधिकारियों को, जिनकी जागीरे और वृत्तियॉ खिलजियों के समय हाथ से निकल गयीं थी–अपनी ओर आकर्षित किया।
- काजी जलाल कशानी जो एक प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली काजी था साथ ही बहुत बड़ा धूर्त था सीदी के उससे बहुत घनिष्ठ सम्बध्ध हो गये थे। वे देर रात तक सीदी के साथ रहते तथा दोनों एकान्त में महत्वपूर्ण बातें किया करते थे। कोतवाल बिरंजतन और हथिया पायक जो एक प्रसिद्ध पहलवान था– बलबन के शासनाल में उच्च पदों तथ उच्च वेतन भोगी थे। यह दोनों जलालुद्दीन के काल में पैसे–पैसे को मोहताज हो गये थे। ऐसे लोग सीदी की खानकाह पर ही रहते तथा सीदी उन्हें जो भी करने को कहता करते। शीघ्र ही इसके अनुयायियों की संख्या 10000 तक पहुॅच गयी।[12]

जैसे–जैसे समय बीतता गया सीदी मौला की भावनायें इन असन्तुष्ट अमीरों के तथा मलिकों के साथ रहकर पराकाष्ठा के शिखर पर पहुॅचने लगीं। क्योंकि वह काजी जलालुद्दीन, काजी–ए–उर्दू तथा अन्य अमीरों के साथ बैठकर योजना बनाते थे।

फरिश्ता के अनुसार काजी जलालुद्दीन कशानी एक उपद्रवी था जिसने सर्वप्रथम राजनीतिक भॅवर में सीदी मौला को खींचा और उसको बहकाया कि वह अपने अनुयायियों से भक्ति की शपथ प्राप्त करे ताकि वह जलालुद्दीन को राज्य सिंहासन से हटाने योग्य हो सके और खिलापत ग्रहण करे।[13] इन लोगों की बैठकों को जनसाधारण समझते थे कि सर्वसाधारण इनकी सेवा में धार्मिक प्रवचन करने आते थे।

इस प्रकार स्थिति उस समय चरम सीमा पर पहुॅच गयी। कोतवाल बिरंजतन और हथिया पायक ने एक खुले विद्रोह की योजना बना डाली और सुल्तान जलालुद्दीन पर जुमे के दिन जब सुल्तान सवार होकर निकले उस समय बार करने का निश्चय किया गया। जलालुद्दीन को मौत के घाट उतारने के पश्चात् उनकी योजना सीदी को खलीफा घोषित करके सुल्तान नासिरूद्दीन की एक पुत्री से उसका विवाह कराने की थी तथा काजी जलाल कशानी को काजी खॉ की उपाधि देकर मुल्तान की अक्ता प्रदान करने की थी इसके साथ राज्य के ऊॅचे–ऊॅचे पद तथा जागीरं बलवनी पुत्रों और अमीरों को देने की थी।[14]

जिस समय यह षडयंत्र रचा गया था उस समय सुल्तान जलालुद्दीन मन्दावर अभियान पर था।[15] यहॉ यह बताना उचित होगा कि धर्मपरायण उत्तराधिकारी राजकुमार खानेखाना की मन्दावर अभियान से पूर्व ही मृत्यु हो चुकी थी। जैसा कि सामान्यतः होता है कि उपस्थित व्यक्तियों में से एक साथी इनका विरोधी बन गया। मुखबिर प्रवासी मंगोल सरदार

मलिक उलगू द्वारा की गयी रिपोर्ट और ईर्ष्यालु दरवेशों के एक विरोधी सम्प्रदाय के आरोपों के फलस्वरूप अर्कली खॉ ने, जो अपने बड़े भाई के मित्रों से घृणा करता था उन पर विश्वास कर लिया। सीदी और सभी षडयंत्रकारी गिरफ्तार कर लिये गये। जब सुल्तान मन्दावर अभियान से वापस आ गया, तब उन्हें सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया गया।[16] सुल्तान ने सत्यता मालूम करने के लिये बहुत प्रयत्न किया परन्तु किसी ने भी अपना अपराध स्वीकार नहीं किया। उन दिनों अपराध स्वीकार कराने के लिए यातनायें देने की प्रथा नहीं थी। अपराध स्वीकार न करने की स्थिति में किसी को दण्ड देना सम्भव नहीं था। प्रवासी मंगोल सरदार मलिक उलगू जिसने षडयंत्र की खबर दी थी उसकी रिपोर्ट कभी भी सिद्ध नहीं हो सकी थी।[17]

इसलिये अग्नि–परीक्षण के द्वारा सत्यता की जॉच का निश्चय किया गया। बहारपुर के मैदान में भयंकर अग्नि प्रज्जवलित की गयी। सुल्तान अमीरों, मलिकों तथा अपराधियों के साथ वहॉ पहुॅचा। वहॉ राजदरबार लगाया गया। नगर के सभी विद्वान एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति मैदान में उपस्थित हुए। इस प्रकार वहॉ शहर के खास व आम उस मैदान पर एकत्रित हो गये जिससे भीड़ बहुत बढ़ गयी। सुल्तान ने आज्ञा दी कि संदिग्ध अपराधियों को अग्नि शिला पर चलाया जाये। यदि वे सत्यनिष्ठ होंगे तो अग्नि उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगी। इस विषय पर धर्मशास्त्रियों से राय मॉगी गयी। वहॉ उपस्थित उलेमाओं ने इसका विरोध किया। धर्मशास्त्रियों ने तर्क प्रस्तुत किया कि अग्नि द्वारा निर्दोष सिद्ध करने की आज्ञा शरीयत ने नहीं दी है। अग्नि का गुण जलाना है इसके द्वारा सच और झूठ का नहीं पहचाना जा सकता। सीदी और उसके अनुचर जब तक दोषी नहीं ठहराये जा सकते जब तक कि उनके ऊपर लगाये गये अभियोग सही सिद्ध न हो जायें। इतने बड़े अपराध में केवल एक व्यक्ति की गवाही कोई महत्व नहीं रखती। सुल्तान इस विरोध से झुक गया और उसने अग्नि परीक्षा लेने का विचार त्याग दिया।[18]

अपराधियों द्वारा लगातार कुछ भी स्वीकार करने से इंकार किये जाने के कारण जलालुद्दीन क्रोधित हो उठा। उनका अपराध साबित करने का कोई भी रास्ता नहीं था। किन्तु सभी जानते थे कि सीदी के संरक्षण में षडयंत्र रचा गया था और सुल्तान जलालुद्दीन अपराधियों को दण्डित करने को कृत संकल्पित था। तथाकथित षडयंत्रकारी एक–एक करके सुल्तान के सामने लाये गये। वह अमीर तथा मलिक जिन पर षडयंत्र में शामिल होने का सन्देह था उनकी भूमि तथा सम्पति जब्त कर ली गयी और उन्हें विभिन्न स्थानों को निष्कासित कर दिया गया। काजी जलाल कशानी को बदायूॅ का काजी बनाकर भेज दिया गया। दोनों हिन्दूओं बिरंजतन और हथिया पायक को जिन्होंने सुल्तान की हत्या का संकल्प लिया था प्राण दण्ड दिया गया। तत्पश्चात् सीदी मौला को बन्दी बनाकर सुल्तान के सम्मुख लाया गया।[19] सुल्तान ने सीदी की ओर क्रोधित होकर देखा और उसे राजनीति में हस्तक्षेप करने के लिए डॉटा। जब सीदी ने पुनः अपने आपको निर्दोष बताया तथा सीदी द्वारा वाद–विवाद किये जाने के कारण जलालुद्दीन क्रोधाभिभूत हो गया और मानसिक सन्तुलन खो बैठा। उसने हैदरी सम्प्रदाय के शेख अबुब्रक तुसी को जो अपने साथियों सहित वहॉ उपस्थित था, से कहा दरवेशो देखो कैसा अपराध इस व्यक्ति ने मेरे प्रति करने के लिये सोचा है? और राज्य विद्रोह की योजना बनायी है। मेरे साथ न्याय करो तथा प्रतिकार लेने को तैयार हो जाओ। शेख का बहरी नामक एक अनुयायी सीदी पर उस्तरा[20] लेकर झपटा और उसके शरीर पर बहुत घाव कर दिये। उसी समय अर्कली खॉ ने महावत को संकेत दिया लियने सीदी मौला को हाथी के नीचे रौंद कर मार डाला। याहिया के अनुसार सीदी की मृत्यु के तीन दिन बाद एक 10 गज लम्बा और तीन गज चौड़ा गड्डा खोदा गया और उसमें सीदी मौला के शेष अनुयायियों को फेंकने के लिये विशाल अग्नि प्रज्जवलित की गयी। किन्तु अर्कली खॉ ने उनकी तरफ से मध्यस्थता की और उन्हें माफ करवा कर छोड दिया गया।[21] अर्कली खॉ का घोर शत्रु मार डाला गया था। अब उसके निर्बल अनुयायियों को मार कर कोई लाभ नहीं होता क्योंकि वे षडयंत्रकारी मौत के मुॅह से निकल कर अर्कली खॉ के ऋणी हो गये थे।

सीदी मौला की हत्या बरनी जैसे अन्धविश्वासी मौलाना की सहनशक्ति के बाहर थी। क्योकि वह भी शेख सीदी मौला से अत्यधिक प्रभावित था। वह कई बार उसकी खानकाह पर गया तथा उसके साथ भोजन करने का सोभाग्य प्राप्त किया था।[22] बरनी इसे जलालुद्दीन द्वारा किया हुआ अविवेकी एवं अत्याचार पूर्ण कार्य समझता था वह शेख सीदी मौला की हत्या के बाद होने वाली अशुभ घटनाओं को इससे जोड़ता है। इसके अनुसार शेख की मृत्यु के दिन काली ऑधी चली जिसने पूरे आकाश को ढक लिया और उसी दिन से जलाली शासन ने स्थायित्व को खो दिया। बरनी अफसोस के साथ कहता है कि शेख सीदी मौला की हत्या के बाद बादशाह को कोई लाभ नहीं हुआ। यद्यपि उसके कुछ समय पश्चात् अनावृष्टि के कारण अनाज का मूल्य देहली में एक जीतल प्रति सेर तक पहुॅच गया[23] शिवालिक प्रदेश के कृषक[24] अनावृष्टि के कारण देहली में एकत्रित हो गये। बीस–बीस और तीस–तीस के जनसमूहों ने भूख की वजह से यमुना में डूब कर प्राण त्याग किया। सुल्तान, अमीरों तथा धनी व्यपारियों ने जनता का दुःख दूर करने के लिए यथासम्भव प्रयास किया फिर भी वे कुछ अधिक न कर सके। दूसरे वर्ष निरन्तर वर्षा हुई कि लोगों ने शायद ही ऐसी अतिवृष्टि कभी देखी हो।[25] अनवरत प्रार्थनाओं के ही पश्चात् दो वर्षों के बाद स्थिति सामान्य हो पायी।[26] तत्कालिक धर्मनिष्ठों एवं श्रद्धालुओं ने प्रारम्भ में अकाल बाद में अतिवृष्टि का कारण सीदी मौला की मृत्यु में खोजा। साथ ही

सुल्तान जलालुद्दीन की दुःखान्त मृत्यु से सीदी की सराहना करने वालों को बहुत समय तक उसके निर्दोष होने का प्रमाण मिलता रहा।

अन्ततः कहा जा सकता है कि सीदी मौला का षणयंत्र में हाथ हो या न हो लेकिन अर्कली खॉ ने सीदी मौला की हत्या करवा कर अपने सबसे बड़े शत्रु का अंत कर दिया। यह सत्य है कि जनता को इसकी हत्या से काफी दुःख हुआ परन्तु राजनीति में जनसाधारण का कोई स्थान न होने के कारण कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

सन्दर्भ –

1. खिलजी वंश का इतिहास : के0एस0 लाल, पृ0 18।
2. तारीखे फरिश्ता : मुहम्मद कासिम फरिश्ता, पृ0 92।
3. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 208–209।
4. कीमियां एक प्रकार की औषधि है जिसके लिये प्रसिद्ध है कि उससे सोना बनाया जा सकता है।
5. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 209।
   तारीखे फरिश्ता : मुहम्मद कासिम फरिश्ता, पृ0 93।
6. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 209।
7. खिलजी वंश का इतिहास : के0एस0 लाल, पृ0 19।
8. शेख फरीद कुतबुद्दीन बख्तियार काकी के शिष्य थे और सूफियों के चिश्ती सिलसिले से सम्बन्धित थे इनकी मृत्यु सन् 1271 ई0 में हुई थी।
9. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 209।
10. वही, पृ0 210।
11. तारीखे फरिश्ता : मुहम्मद कासिम फरिश्ता, पृ0 93।
12. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 210।
    तारीखे फरिश्ता : मुहम्मद कासिम फरिश्ता, पृ0 234।
13. जलालुद्दीन फिरोज शाह खिलजी, शेख अब्दुर्रशीद, पृ0 12।
14. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 210।
15. फुतूहुस्सलातीन : ऐसामी, पृ0 215–216। जलालुद्दीन मलिक छज्जू के विद्रोह का दमन करके 2 फरवरी 1291 ई0 को लौटा और 22 मार्च 1291 ई0 को रणथम्मौर के लिये रवाना हो गया। लगभग सभी इतिहासकार एकमत हैं कि सीदी मौला विवाद इसी समय के मध्य घटा।
16. दिल्ली सल्तनत : मौ हबीब एवं निजामी, पृ0 278–279।
17. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 211।
18. वही, पृ0 211।
19. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 212।
20. हैदरी कलन्दर के सम्प्रदाय की स्थापना निजामुद्दीन तूसी द्वारा की गई थी यह कलन्दर अपने सर, चेहरा,, यहॉ तक की भौंहे भी मुड़ा लेते थे, अतः उस्तरा रखना उनमें एक प्रथा थी इसलिए बहरी सीदी पर उस्तरा लेकर आक्रमण करने में सफल हुआ ।
21. तारीखे मुबारकशाही : याहिया, पृ0 67।
22. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 209।
23. वही, पृ0 212।
24. जियाउद्दीन बरनी कृषकों के स्थान पर हिन्दू लिखता है।
25. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 212।
26. फुतूहुस्सलातीन : एसामी, पृ0 2019–220।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. खाजायनुल फुतूह : अमीर खुसरो, अनुवाद प्रो0 हबीब, बम्बई 1933।
2. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, अनुवाद डॉ सैयद अतहर अब्बास रिजवी।

3. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक इसामी, अनु0 आगा मेंहदी हुसेन, आगरा 1938।
4. तरीखे मुबारकशाही : याहिया सर हिन्दी, अनु0 के0के0 बसु।
5. तरीखे फरिश्ता : मुहम्मद कासिम फरिश्ता, अनु0 फिदाअली।
6. मिफताहुल फुतूह : अमीर खुसरो, सम्पादित एस0ए0 रशीद अलीगढ़।
7. साउथ इण्डिया एण्ड हर मौहमडन इनवेडर्स : के0एम0 अशरफ, लंदन, 1921।
8. स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री : एस0एच0 होडीवाल, बम्बई, 1943।
9. एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द सल्तनत ऑफ देहली : आई0एच0 कुरैशी, लाहौर, 1942।
10. खिलजी वंश का इतिहास : डॉ के0एस0 लाल, द्वितीय संस्करण विश्व प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993।
11. दिल्ली सल्तनत : मौ हबीब एवं खलीक अहमद निजामी।
12. मध्ययुग का इतिहास : डॉ ईश्वरी प्रसाद।
13. जलालुद्दीन फिरोज खिलजी : शेख अब्दुर्रशींद
14. आदि तुर्क कालीन भारत : सै0अ0अ0 रिजवी।
15. देवलरानी ख़िज्र खॉ : अमीर खुसरो, अनुवाद – रसीद अहमद सलीम, अलीगढ़ 1917।
16. फतवाए जहांदरी : जियाउद्दीन बरनी, अनु0 मौ0 हबीब एवं खलिक अहमद निजामी।
17. जफरूलवाली बिमुजफ्फर वाली : हाजी उद्दबीर, सर डैनिसन।
18. नूह सिपहर : अमीर खुसरो, सम्पादित एम0 वाहिद मिर्जा।
19. मैडीवल इण्डिया : एस0सी0रे0, कलकत्ता, 1931।
20. खिलजी कालीन भारत : डॉ सैयद अतहर अब्बास रिजवी।
21. दिल्ली सल्तनत : डॉ रति भानु सिंह नाहर।

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज आफ ऐजूकेशन, सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़
गुरूहरसहाय फिरोजपुर (पंजाब)